जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 16 संख्याः 207 प्रभात चूरू, रविवार 24 नवम्बर, 2024 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

राजस्थान के उपचुनावों में भाजपा की भारी जीत के बाद पार्टी के प्रदेश कार्यालय में उत्सव का माहौल रहा। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के पार्टी कार्यालय पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत हुआ।

भाजपा ने 7 में से 5 सीटें जीतीं, मुख्यमंत्री का कद बढ़ा

मुख्यमंत्री भजनलाल ने 4 बागियों को मनाया, 14 चुनावी सभायें, 44 सामाजिक बैठकें कीं

जयपुर, 23 नवम्बर। राजस्थान में 7 सीटों पर हुए उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 5 सीटों पर जीत दर्ज की। दौसा में कांग्रेस और चौरासी में बाप को सफलता मिली। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने विधानसभा वार सीटों के समीकरणों पर ध्यान देते हुए टिकट वितरण से लेकर चुनावी मैनेजमेंट पर पूरा फोकस रखा। विधानसभा उपचुनाव के दौरान ,ज़मीनी, जिताऊ एवं सर्वप्रिय चेहरे को ढूँढना एक चुनौती थी, जिसे मुख्यमंत्री ने पहले ही भाँप लिया था। मुख्यमंत्री द्वारा माइक्रो मैनेजमेंट एवं संगठन समन्वय के साथ-साथ सर्वप्रिय चेहरों का चयन भाजपा के कार्यकर्ताओं में उत्साह एवं जीत का संचार कर गया।

- भाजपा के पास पूर्व में सात में से केवल एक, सलूम्बर सीट थी। सफल चुनावी मैनेजमेंट से पार्टी ने सलूम्बर के अलावा देवली-उनियारा, रामगढ़, झुंझुनू तथा खींवसर सीटों पर भी जीत हासिल की।

टिकट की घोषणा के पश्चात मुख्यमंत्री के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी, खींवसर, सलूम्बर,रामगढ़ और झुंझूनु सीटों पर बागियों को मनाना। उन्होंने समय रहते बाग़ी कार्यकर्ताओं को बिना शर्त मना लिया, जिससे भाजपा जीत की ओर आगे बढ़ चली। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सात विधानसभा क्षेत्रों के लिए अपने आवास एंव क्षेत्रों में विभिन्न स्तर की बैठकें आयोजित कीं और बूथ स्तर पर अच्छा माइक्रो मैनेजमेंट किया। विभिन्न पार्टी पदाधिकारियों, विधायकों, पूर्व नेताओं, सामाजिक नेताओं एवं मंत्रियों को नियुक्त किया। सामाजिक आधार पर पहचानकर महत्वपूर्ण नेताओं को काम का जिम्मा सौंपा। वे प्रदेश के ऐसे एकमात्र नेता रहे, जिन्होंने सातों विधानसभा क्षेत्र में नामांकन के समय विधानसभाओं में जाकर प्रत्याशी, कार्यकर्ता एवं चुनावी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

''समाजवाद'' और ''धर्म निरपेक्षता'' पर सुप्रीम कोर्ट करेगा फैसला

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 नवम्बर। आपातकाल के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना में समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता शब्द जुड़वाए थे, उस पर सुप्रीम कोर्ट सोमवार को निर्णय करेगा।

जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की बैंच ने शुक्रवार को फैसला रिज़र्व कर लिया। जब

- ये शब्द आपातकाल में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने संविधान की प्रस्तावना में जुड़वाए थे। डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी व कुछ अन्य ने इस कार्यवाही की वैधता पर सवाल उठाए था।

सी.जे.आई. ने कहा कि ''हम यह नहीं कह सकते कि आपातकाल के समय संसद ने जो कुछ किया व शून्य था।'' उन्होंने कहा कि संविधान के 42वें संशोधन की इस अदालत ने कई बार समीक्षा की है और संसद ने भी इसमें हस्तक्षेप किया है।

बैंच के समक्ष कई सारी याचिकाएं हैं जिन्हें सुब्रमण्यम स्वामी व कई अन्य लोगों ने दायर किया है, इनमें दिल्ली के वकील और भाजपा नेता अश्विनी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान में कांग्रेस की वही पुरानी कहानी

एक तरफ ''निर्लज्ज'' महत्वाकांक्षा, दूसरे का कोई नहीं सानी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 नवम्बर। राजस्थान में, सात उपचुनावों में कांग्रेस केवल एक सीट पर जीत पाई, और बाकी छः सीटों पर उसे हार का मुँह देखना पड़ा। दौसा में पार्टी को विजय मिली, जो वरिष्ठ कांग्रेसी नेता सचिन पायलट का गढ़ है तथा जहाँ उन्होंने प्रचार किया और एक मुश्किल जीत हासिल की। उन्होंने सुनिश्चित किया कि एक साधारण कांग्रेस कार्यकर्ता की जीत हो और वो चुनकर विधानसभा में जाए।

रोचक है कि इस चुनाव में परिवारवाद के खिलाफ वोट पड़े और महारथी नेता अपने बच्चों के प्यार के कारण सफल नहीं हो पाए तथा अपने बच्चों की जीत सुनिश्चित नहीं कर पाए। किरोड़ी लाल मीणा के भाई, हनुमान बेनीवाल की पत्नी, बृजेन्द्र ओला तथा ज़ुबेर खान के बेटे, सब हार गए।

लेकिन, पार्टी के बाकी वरिष्ठ नेताओं का क्या? अशोक गहलोत चुनाव प्रचार के दौरान पूरी तरह गायब थे, लेकिन, चुनाव खत्म होते ही बाहर निकले और अपने राजनीतिक खेल शुरु कर दिए।

ए.आई.सी.सी. महासचिव रंधावा एक बार भी चुनाव प्रचार के दौरान

- सभी बड़े नेता गहलोत, रंधावा आदि नदारद रहे उपचुनाव में, पर चुनाव खत्म होते ही ''राजनीति'' करने के लिए तैयार होकर प्रस्तुत हो गये।
- दूसरी ओर पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट, भाजपा की, लहर में, अपनी सीट फिर जिता लाये, पर उनको श्रेय देने को एक बार फिर, पुरानी लीडरशिप तैयार नहीं।
- डोटासरा ने पुराने ''स्थापित'' नेताओं की अनुपस्थिति का लाभ लेकर, अपना नेतृत्व जमाने के लिए पूरी मशक्कत की, पर अन्त में ''फुँके'' कारतूस ही साबित हुए, और अपने क्षेत्र में भी पार्टी को जिता नहीं सके।

राजस्थान नहीं आए। उनकी पत्नी पंजाब से उप चुनाव लड़ रही थीं, वो हार गईं।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष, डोटासरा, जिन्होंने प्रचार अभियान की कमान संभाली, यह साबित करने के लिए कि वो पार्टी के असली नेता हैं, बुरी तरह असफल रहे और स्वयं अपने क्षेत्र को भी हार से नहीं बचा सके।

क्या अब डोटासरा हार की जिम्मेवारी लेंगे और इस्तीफा देंगे? पार्टी में किसी तरह के ठोस और सुसंगत नेतृत्व के अभाव में पार्टी के नेता, कार्यकर्ता और पदाधिकारी, सभी यह प्रश्न पूछ रहे हैं।

अंतर्कलह, योग्यता के बिना अतिमहत्वाकांक्षा, खड़ा विभाजन आदि की समस्याओं से जूझ रही पार्टी, जिसके साख खो चुके वरिष्ठ नेता वापसी की कोशिश कर रहे हैं, में सचिन पायलट ही एक ऐसे नेता नज़र आते हैं जिनमें वोट खींच लेने की क्षमता है, जबकि, पार्टी ने उनकी संपूर्ण क्षमताओं का उपयोग नहीं किया है।

छत्तीसगढ़ के प्रभारी, ए.आई.सी.सी. महासचिव के रुप में सचिन पायलट जो कर रहे हैं वो कोई भी देख समझ सकता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस कर्नाटक में तीनों उपचुनावों में जीती

प्रदेशाध्यक्ष व उपमुख्यमंत्री शिव कुमार के लिए जीत व्यक्तिगत उपलब्धि है, क्योंकि इस जीत से डी.के. शिवकुमार की वोकालिग्गा पर पकड़ और मजबूत होने का संकेत है

- लक्ष्मण वैंकट कुची -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 23 नवम्बर। आज महाराष्ट्र की हार से जहाँ कांग्रेस बहुत दुःखी है, वहीं कर्नाटक में उसने तीनों विधानसभा उपचुनाव बड़े आराम से जीत लिये हैं। बहुत ही प्रभावी जीत के अन्तर्गत, कांग्रेस ने भाजपा और जनता दल (सेकुलर) से एक-एक सीट छीन ली है।

कर्नाटक ने सत्ता-विरोध को नकार दिया, जो लोकसभा चुनावों में भारी पड़ा था। कांग्रेस ने अपने दोनों विपक्षी दलों को मात देते हुये, विधानसभा में अपनी संख्या 137 तक पहुँचा दी।

ओल्ड मैसूर क्षेत्र की चन्नापटना सीट के अलावा, शिग्गाँव सीट दोनों सीटों को छीनना कांग्रेस के लिये बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि उसने इस चुनाव दो पूर्व मुख्यमंत्रियों के पुत्रों को हराया है।

इसके अलावा, कांग्रेस ने कल्या कर्नाटक में अपनी सन्दूर सीट को बड़ी आसानी से अपने पास बरकरार रखा है। इससे एक ऐसी पार्टी के रूप में कांग्रेस का मनोबल काफी बढ़ा है, जिस पर भाजपा लगातार हमले करती आ रही है।

- यह जीत कांग्रेस के लिए ज्यादा मीठी इसलिए भी है, क्योंकि कांग्रेस सरकार भाजपा के भारी दवाब में थी, भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण, पर, शायद ये आरोप जनता के गले नहीं उतरे।
- प्र.मंत्री देवेगौड़ा ने अपने पौत्र व पूर्व मुख्यमंत्री कुमार स्वामी ने अपने पुत्र नीखिल के लिए जी-तोड़ मेहनत की थी। पूर्व मुख्यमंत्री येदुरप्पा भी निखिल कुमार स्वामी के पक्ष में प्रचार में जुटे थे। ऐसी परिस्थितियों में कांग्रेस के उम्मीदवार योगेश्वर की जीत वाकई में उल्लेखनीय थी।
- इसी प्रकार पूर्व मु.मंत्री बोम्मई के पुत्र व भाजपा उम्मीदवार भारत बोम्मई की हार भी भाजपा के लिए काफी पीड़ा पहुंचाने वाली थी।
- तीसरी सीट सदूर में कांग्रेस उम्मीदवार की जीत का महत्व है, कि माइनिंग माफिया प्रमुख गलि जनार्दन रेड्डी के खुले समर्थन के बावजूद भाजपा उम्मीदवार हारा।

पूर्व मुख्यमंत्री तथा प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौडा की प्रतिष्ठा को इससे बड़ा नुकसान हुआ है, क्योंकि उन्होंने अपने पौत्र निखिल कुमारास्वामी के लिये स्वयं भी जबरदस्त प्रचार किया था। जे.डी. (एस.) के उम्मीदवार निखिल पूर्व मुख्यमंत्री एच.डी. कुमारास्वामी के पुत्र है तथा देवेगौडा भी इस सीट के लिये अपनी प्रतिष्ठा दाँव पर लगा दी थी। यही नहीं, एक अन्य पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येदिउरप्पा ने भी निखिल के पक्ष में प्रचार किया था। इस सबके बावजूद, चन्नापटना सीट से निखिल कुमारा स्वामी कांग्रेस के सी.पी. योगेश्वर से 25000 से अधिक वोटों से हार गये।

भाजपा जे.डी. (एस.) गठबंधन के लिये एक अन्य लज्जाजनक पराजय के अन्तर्गत एक अन्य पूर्व मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई के पुत्र भरत बोम्मई चुनाव हार गये हैं। भाजपा उम्मीदवार भरत बोम्मई कांग्रेस के पठान यासिर से 13000 से अधिक वोटों से हारे हैं।

कांग्रेस के इस प्रदर्शन से यह सिद्ध होता है कि उसके द्वारा दी गई गारन्टियाँ काम कर रहीं हैं, भले ही उसके खिलाफ ऐसा माहौल बनाया जा रहा था कि सरकार मुफ्त की रेवड़ी बाँटकर, राज्य को दिवालिया बनाती जा रही है। लेकिन यह जीत कांग्रेस की गारन्टी स्कीमों का स्पष्ट समर्थन है। इन गारन्टियों में, कांग्रेस की महिला केन्द्रित योजनाएँ भी शामिल थीं, जैसे मुफ्त बस यात्रा तथा ''शक्ति'' एवं ''गृहलक्ष्मी'' योजनाओं के अन्तर्गत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महाराष्ट्र की करारी हार : प्रश्न चिन्ह लगा कांग्रेस का भाजपा का विकल्प बनने पर?

ममता बनर्जी, जिन्होंने एक बार फिर बंगाल में छः के छः उपचुनाव जीत कर, दावा पेश किया, समय आ गया है, विपक्ष का नेतृत्व उन्हें सौंपने का

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 23 नवम्बर। महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन के हाथों कांग्रेस और महा विकास अघाड़ी गठबंधन की जबरदस्त हार हुई है।

इससे माह 5 महीने पहले, कांग्रेस, शिवसेना (यू.बी.टी.) तथा एन.सी.पी. (एस.पी.) गठबंधन ने लोकसभा चुनाव में 48 में से 30 सीटें जीती थीं, जनता ने नरेन्द्र मोदी की राजनीति को नकार दिया था तथा विपक्षी दलों को वोट दिये थे।

राज्य विधानसभा की 288 सीटों में से भाजपा तथा इसके गठबंधन

- उनका कहना है, केवल वो ही भाजपा का प्रसार रोकने की क्षमता रखती हैं, कांग्रेस नहीं।
- थक हार कर जयराम रमेश ने एक बार फिर, ई.वी.एम. मशीन का सहारा लिया, भाजपा की जीत व कांग्रेस की ''अप्रत्याशित'' हार के लिए।
- पर, इण्डिया गठबंधन के कांग्रेस के साथी भी इस बार ई.वी.एम. के नारे के पक्ष में बोलने को तैयार नहीं। आर.जे.डी. के नेता मनोज झा ने साफ कहा कि, वे ई.वी.एम. को इस हार का कारण नहीं मानते।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कोटा में एक और कोचिंग छात्र ने आत्महत्या की

कोटा, 23 नवम्बर (निसं)। कोचिंग सिटी कोटा में एक और कोचिंग छात्र द्वारा आत्महत्या का मामला सामने आया है। यह छात्र इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जे.ई.ई. की तैयारी कर रहा था। मूल रूप से मध्यप्रदेश का निवासी यह छात्र कोटा में राजीव गांधी नगर हॉस्टल की छठी मंजिल पर रूम लेकर अकेला ही रहता था। उसने रूम की बालकनी की जाली काटी और बालकनी से कूद कर आत्महत्या कर ली।

- इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा छात्र हॉस्टल की छठी मंजिल से कूदा।

हॉस्टल बिल्डिंग के बाहर लहूलुहान हालत में मिले छात्र को हॉस्टल संचालक घायल अवस्था में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाईकोर्ट ने कालवाड़ रोड से अतिक्रमण हटाने का एक्शन प्लान मांगा

जयपुर, 23 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने जे.डी.ए. कमिश्नर को निर्देश दिए हैं कि वह अपने रिकॉर्ड के आधार पर कालवाड रोड और इस पर किए गए अतिक्रमणों के संबंध में रिपोर्ट पेश करे। इसके साथ ही अदालत ने जे.डी.सी. को दो सौ फीट चौडी इस रोड से अतिक्रमण हटाने का एक्शन प्लान भी पेश करने को कहा है। अदालत ने

- एक याचिका में कालवाड़ रोड पर गोल्डन बेकरी से एक्सप्रैस-वे तक 200 फिट की रोड पर कई जगह प्रभावशाली लोगों के अतिक्रमण को हटाने की मांग की गई है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'महाराष्ट्र में भाजपा को निर्णायक बढ़त, मुख्यमंत्री के चेहरे पर अब कोई विवाद नहीं'

देवेन्द्र फड़नवीस के इस बयान ने शिंदे के मुख्यमंत्री बनने पर ''सस्पैंस'' बनाया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 नवम्बर। भाजपा नेता तथा महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस ने शनिवार को शिवसेना नेता एकनाथ शिन्दे के मुख्यमंत्री पद पर बने रहने पर अनिश्चय एवं असमंजस की स्थिति पैदा कर दी क्योंकि उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनावों में भाजपा के बहुत अच्छे प्रदर्शन के बाद, ''मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर कोई विवाद नहीं हैं''।

अकेली भाजपा 288 में से करीब 129 में से करीब 129 सीटों पर आगे चल रही है तथा उसने 288 सदस्यीय महाराष्ट्र विधान सभा में 221 सीटों के साथ सत्तारूढ़ महायुति को स्पष्ट बहुमत की स्थिति में ला दिया है, जबकि महा विकास अघाड़ी 55 सीटों तक सीमित रह गया है।

सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेतृत्व में इंडिया ब्लॉक झारखंड में भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. से आगे है। इंडिया ब्लॉक 55 सीटों पर, जबकि एन.डी.ए. 30 सीटों पर आगे है। झारखंड में बहुमत के लिये 41 सीटें चाहिये। इस प्रकार महाराष्ट्र तथा झारखंड दोनों ही राज्यों में सत्तारूढ़ गठबंधन सत्ता में बने रहने की सुस्पष्ट स्थिति में हैं।

महायुति गठबंधन भाजपा, एकनाथ शिन्दे की शिव सेना, अजित पवार की एन.सी.पी., जे.एस.एस., आर.एस.वी.ए. तथा आर.वाई.एस.पी. से मिलकर बना है। एम.वी.ए. में कांग्रेस, उद्धव ठाकरे की शिव सेना (यू.बी.टी.), शरद पवार की एन.सी. पी.-एस.पी. तथा पी.डब्ल्यू. पी. आई. शामिल हैं। राज्य ने पिछले पाँच वर्षों में तीन अलग-अलग मुख्यमंत्री देखे-भाजपा के देवेन्द्र फड़नवीस, शिव सेना (यू.बी.टी.) के उद्धव ठाकरे तथा शिव सेना (एस.एच.एस.) के एकनाथ शिन्दे।

- महायुति गठबंधन महाराष्ट्र की 288 में से 189 सीटों पर विजयी रहा है, इनमें से अकेले भाजपा ने 130 सीटें हासिल की हैं। राजनैतिक हलकों में चर्चा है कि इतनी सीटें जीतने के बाद भाजपा अवश्य ही मुख्यमंत्री के पद पर दावा करेगी।
- महाराष्ट्र में कांग्रेस का गठबंधन, महाविकास अघाड़ी बुरी तरह हार गया और मात्र 55 सीटों पर सिमट कर रह गया।
- झारखंड ने अवश्य कांग्रेस के इंडिया ब्लॉक को राहत दी है यहां हेमंत सोरेन की पार्टी, झारखंड मुक्ति मोर्चा व कांग्रेस का गठबंधन निर्णायक जीत के करीब है।
- वायनाड से भी कांग्रेस के लिए अच्छी खबर है, यहां प्रियंका गांधी ने राहुल गांधी से भी बड़े अंतर से जीत दर्ज की है। उन्हें कुल 6.1 लाख वोट मिले और वे 4.1 लाख वोटों से जीती हैं। अब संसद में भाई-बहिन एक साथ दिखेंगे।

कांग्रेस की साख सिर्फ वायनाड में बच सकी यहां जीत तय थी। यहां से कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी ने जीत हासिल की है। यह सीट उनके भाई राहुल गांधी ने खाली की थी। प्रियंका ने यह सीट राहुल से भी ज्यादा 4.1 लाख वोटों के अंतर से जीती है। यहां उन्हें 6.1 लाख वोट मिले जो कि 2024 में राहुल गांधी को मिले वोट से अधिक है। राहुल ने यह सीट 3.65 लाख के अंतर से जीती थी। भाजपा नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन को महाराष्ट्र में निणयिक जीत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यूडी टैक्स : रिश्तेदार को नोटिस देकर सम्पत्ति सील करना अवैध

जयपुर, 23 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने सौ वर्ग गज से कम आकार की संपत्ति के अरबन डवलपमैंट (यू.डी.) टैक्स का नोटिस रिश्तेदार के नाम देकर संपत्ति सील करने की कार्रवाई को अवैध घोषित किया है। इसके साथ ही अदालत ने सील को तत्काल हटाने के आदेश दिए हैं। चीफ जस्टिस (सी.जे.) एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने यह आदेश सैनी स्टोन बिल्डिंग मटेरियल की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

- राजस्थान हाईकोर्ट ने भरतपुर नगर निगम को तुरन्त सील हटाने के निर्देश दिये।

याचिका में अधिवक्ता सुनील कुमार सिंगोदिया ने अदालत को बताया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)